।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

बसंत/होरी के पद/कीर्तन

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

<u>।। 1 ।।</u>

चलि प्यारी तोहि पिया बुलावै ।। टेक ।।

ले ले नाम श्याम बंशी में झीनी सुर तुम्हरे गुन गावै ।।

निरखो आज विपिन की शोभा नई बहार सबके मन भावै ।

कुंज २ दुमबेलि प्रफुल्लित नव पल्लव नव छबि दरसावै ।।

कोकिल कूजत बचन निकर रस बरषत सुमन बाग झरि लावै।

ललित लड़ती कुसुमाकर सुख देखत बने कहत नहिं आवै।।

<u>।। 2 ।।</u>

<u>(राग बसंत)</u>

देख बसंत समय शोभा नई तज अभिमान चली बन गोरी।।टेक।।

भूषण बसन बसंती ओढ़ें सुन्दरता की रास किशोरी।।

कोकिल गान गुंजार मधुप सुनि अति हिये हरषी भामिन भोरी।

ललित लड़ैती भेट पिया सों हँसिर डारी रूप ठगोरी।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 3 ।।

(राग धनाश्री)

प्रान पिया प्रीतम प्यारे को आज रंग में बोरूं।। टेक ।।

अंक भरूं न डरूं कलंक मैं लोक लाज तृण तोरूं ।।

वा बिन परत न चैन एक छिन जातें तोहि निहोरूं।

ललित लड़ैती बेग मिला उन पायँ लाग कर जोरू।।

।। 4 ।।

(सारंग रसिया)

होरी में लाज न रहे प्यारी।। टेक ।।

रसिया फिरत बजावत डफली गावत लाज भरी गारी ।।

मूंठ गुलाल इतै उत फेंकत गैल रोक रह्यौ ब्रज नारी।

ललित लड़ती कठिन है बचिवो छैल करत ऊधम भारी।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 5 ।।

देखोऊ प्यारी कुंजबिहारी मूरतिवंत बसंत ।

मोरी तरुण तरुलता तनमै मनसिज रस बरसंत ।।

अरुण अधर नव पल्लव शोभा विहसनि कुसुम विकास ।

फूले विमल कमल से लोचन सूचित मनको हुलास ।।

चल चूर्ण कुन्तल अलिमाला मुरली कोकिल नाद ।

देखियति गोपीजन बनराई सुदित मदन उनमाद ।।

सहज सुबास स्वास मलयानिल लागत सदानि सुहायौ।

श्रीराधामाधवी गदाधर प्रभु परसत सुखपायौ ।।

।। 6 ।।

अद्भुत शोभा वृन्दावनकी देखो नन्दकुमार ।

कंत बसंत जान आवत बन बेलिन कियो श्रृंगार ।।

पल्लव वरण वरण तन पहरे वरण वरण फल फूल।

ये तो अधिक सुहाये लागत मनो अभरण समतूल ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

बालक विहग अनंग रंग भरि बाजत मनो बधाई।

मंगल गीत गाययेको जानी कोकिलबधू बुलाई ।।

बहत मलय मारुत परिचारक सबको मन संतोपे।

द्विज भोजन सो होत अलिन के मधु मकरन्द परोसे ।।

सुनि सखि बचन गदाधर प्रभुके चलो प्रीतम पै जैये ।

नव निकुंज महल मंडप में हिलमिल पंचम गैये।।

।। 7 ।।

तेरी नवल तरुणता नव बंसत । नव नव विलास उपजतअनन्त।।नत्र अरुणाधर पल्लव रसाल। फूले विमल कमल लोचनविशाल।।चल भृकुटी भंग भृगनिकी पांति।मृदुहसनि लसनि कुसुमनिकी कांति।।भई प्रकट अल्प रोमावलि मौर।स्वास सुरभि मलय पवनझकोर।। फले फल उरोज सुन्दर सुठान। मधु मधुर बोलनि कोकिला गान ।। देखत मोहे बृज कुंवरराय । बाढ़यौ मन-मन्मथ चोंगुनों चाय ॥तोहि मिलि बिलस्यौ चाहत हैं स्याम। जाहि देखत लज्जितकोटिकाम ।।तब चली चरण मंथर बिहार।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

रन झनन-झनन नूपुर भंकार ।। पुलकित गोकुल कुलपति कुमार।
मिलि भयौ गदाधर सुख अपार।।

।। <u>8 ।।</u>

खेलत फाग रंग रह्यो सजनी नागर गौर गोपाल ।

जूट लटक छन्दक चटकारे शिर धुंधरारे बार ।।

ता पर माल मालती मधुकर मधुकरि करत गुंजार ॥ध्रु।।

अलकन झलक तिलक ललकत चमकत श्रुति कुंडल युगगंड ।

अमल कमल लोहित लोयन घन बरखत धार अखंड ।।

भौंह नटन नासिका निकाई बन्धु अधर सुरंग ।

दमकन दसन हसन आनन छवि बत्तिचत्ति कोटि मयंक ।।

कण्ठी कण्ठ माल उर ऊपर पचरंग हार समेत ।

बीच उर बसी जटित लालकल उदित अरुण छवि देत ।।

भुज गजराज सुण्डपर मंडित अंगद बलय सुठीन ।

पहुंचि सुदिरिन करनख मिलि शोमा वरने कचिकीन ।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

कटि केहरि पहिरे पट कीनों पड़का बांधि अमेठ ।

चन्दन चरचि ओदि उपरैना दरसत सरस अंगेठ ।।

अरुण चरा नखरावलि रंजन गजन पल्लव राम।

जुगल जलजदल शेखर मानों राकेश भये दश भाग ।।

बलि पैंजनि ध्वनि सुनि सज्जित अति लजित चटक मराल ।

कबहु त्वपलगति चलत ललित अति मत्तगयंदकी चाल ।।

नित्यानन्द राम सुन्दर पुरुषोत्तम आदिक संग

उड़त अबीर गुलाल घुमड में उपजत भाव तरंग ।।

अद्भूत साज समाज कुसुम जल छिरक करत किलकार ।

निरख सगण श्रीवास माधुरी रहत अपनपी हार ।।

दामोदर नरहरि सहचर मिलि गावत केलि धमार ।

मुख माइत झक कोरत बोरत अरगजा सहज संभार ।

निरखि गदाधर आवेशित चित पुलकित नखसिख अंग मुरार ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 9 ।।

होरी रंग भर गावें सोई खिलार डफलिये बजायें ।

गाय-गाय के रंग उपजावे जोई रीझे ताकों फेर सुनावें ।॥

तब अरगजे मरगजे बागे नयन सेन दें रस उपजावें ।

कहियत नायक दक्षण-लक्षण आप गदाधर नाम कहावें ।।

।। 10 ।।

सकल कुंवर गोकुल के निकसे खेलन फाग ।

हरि हलधर मध्य नायक अंतर अति अनुराग ।।

ओलन बूका बंदन रोरी हरद गुलाल ।

बाजति मधुर महुवरि मुरली अरु डफ ताल ।।

कनक कलश केसरि मरि कावरि किंकर कंथ ।

औरु कहां लग कहिये भाजन मरे सुगंध ।।

लै कंसमनि गेंदुक करत परस्पर मार।

छूटति फैंट लटपटी विखरि परत घनसार ।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

हँसत हंसावत गावत छिरकत फिरत अबीर ।

भीजि लगे तन शोभत रंगरंग रंजित चीर ॥

कोलाहल ग्वालनकी सुनि गोपिका अपार ।

टोलनि-टोलनि निकसी करि सोलह श्रृंगार ।।

रूप माधुरी जिनकी कवि पै कही न जाय ।

जिनहि सची रति रंमा पगहू परति लजाय ।।

अति ही सरस स्वर गावत कोऊ झील कोऊ घोर ।

जिनही सुनत नहीं मावै बीणा नाद कठोर ।।

ललित गली गोकुल की होत विविध रंग खेल ।

अगर सहित कुंकुम के चली भरनि पर खेल ।।

गयो गुलाल गगन चढ़ि भयौ ब्रज सदन सुरंग ।

मनौ खुर खेह उड़ी है सेना सजी अनंग ॥

सीचत हरि नानारंग भाजत गोविन गात ।

मानों उमगि बसन तें अन्तर प्रेम चुचात ।।

लगे बनिता बदननिसौं कृष्णा गरके पंक ।

परि पूर्ण चंदनिते मनी-च्यै चल्यौ कलंक ।।

बोलत ग्वाल बराती हमारे हरिकी है व्याह ।

दुलहिनि गोपकिशोरी मोहन सबकी नाह ।।

सुनि सब गोपी कोपी हलधर पकरे जाय ।

अंजन लै हग आंजि मुख मृगमद लपटाय ।।

पुनि सबमिलि जुरियाई पकरे मदन गोपाल ।

कनक कलि मंडलमै शोभत तरुण तमाल ।।

जब वृषभान दुलारी हरि भरिलीनी अंक ।

कहीं न जाय ता सुखकी जानौ निथिपाई रंक ॥

कहिन सकै कौऊ हरि के अगणित चरित विचित्र ।

जिहि तिहि भांति गदाधर रसना करउ पवित्र ।।'

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 11 ।।

(राग कान्हरी)

हो हो हो सब खेलत होरी। मध्य हलघर गिरिधर की जोरी ॥

तैसी ये परी पूर्ण पूर्णमासी। विमल जोन्ह वर्षे सुखरासी ।।

खोरिनि खोरिनि करत कलोले । हँसत हंसावत गावत टोलें' ।।

इत ये बदत मनोहर गारी। उत झुमक गावति बृजनारी ॥

उड़ि गुलाल छाई नभबीच। मची अगरसत कुंकुम कीच ।।

चिरजीवउ सुंदर युवराज । युगयुग नन्दराय की राज ।।

कहे न जाहि गोकुल के चाय। देखि गदाधर बलि-बलि जाय ।।

।। 12 ।।

(राग काफी)

श्री गोकुल राजकुमार लाल रंगमीने हैं। खेलत डोलत फाग सखा संग लीने हैं ।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

चित्र विचित्र सुवेष सबै अनुकुले हैं। राजत रंग सुरंग सरोजसे फूले हैं ।।

एकनिक करकंज हैं जोरी जराय की। एकनिक पिचकारी है हेम मरायकी ॥

कुंकुम घोरि भरे घट हाटकके घने । पंकज पुंज पराग मृगमदसौं सने ।।

ढोलक ढोल निसान मुरुज रु'ज बाजहीं । मैनके मेघ मनौ रस वृष्टिसौं गाजहीं ॥

ध्वनि सुनिक अकुलाय चली बृजनागरी।एकते एक महागुण रूपकी आगरी ।।

श्रीराधाकें संग सुहाई अनेक सहेली हैं।कामके कानन की मानों कंचनवेली हैं ।।

वेष बनायेकी भांति न जाति बखानी है।जेती केती उपमा मनमें बिलखानी है ।।

कोकिल कूर कहा स्वर भेदहि जानई । कुंजर कायर कौन कहा गति ठानई ।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

कदलिनि कौ जुस्वभाव परचौ अति कंपको ।हेम लयौ हठ नेम सुपावक कंपकौ ।।

खंजन कंजसों लागि रहे गति लासतें ।केहरि कंदर मन्दिर मै दुरे त्रासतें ।।

पंकमें पकंज मूल रहे छिपि लाजतें । नित्य प्रकास विलास मिठ्यौ द्विजराजतें ॥

ताल पखावज आवज बाजत जंत्र हैं। गान मनोहर मैनके मोहन मंत्र हैं।

सो इतकी उतकी ध्वनि लागें सुहाई हैं। मानौं अनंगके आंगन बाजे बधाई हैं ।।

गोकुल खोरीनि गोरीनि खेल मचायी है। रंग सुरंग अबीरसों अंबर छायो है ।।

दृष्टिकरी पिचकारी मरी अनुरागसीं । जाय लगी बृजराज लला बडमागसौं॥

मंजुल हास कपूरकी धूरि उड़ावहीं। सुन्दरश्याम सुजान के नैन जुड़ावहीं ।॥

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

लाल गोपाल की धूधरी में मुखयों लसै । प्रात पतंग प्रभा मधि कंचन कंजसे ।।

आइ घिरी अबला सबलाल गोपाल की। हेमलता लपटी मनौ श्याम तमाल सौं ।॥

गावति गारीनि नारीन ही झुकि प्रीतकी । बात बनावति आपनी-आपनी जीतकी ॥

कोऊ गहैं पट पीत कोऊ बन दामकौं । कोऊ निशंक हूँ अंक भरै घनश्याम कौं ।।

श्यामके सीससे स्यामाजू केसरि ढोरी है।दै करतारी हसें सब हो हो होरी है ॥

एसौई ध्यान सदा हरिको हीयें जो रहै।तोपे गदाधर बाके भागकी को कहै ।।

।। 13 ।।

बाढ्यो अति आनन्द खेलत फाग हरी ।संग सकल आभीर अरगजा माट भरी ।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

ताल मृदंग उपंग मुरज डफ वेन धुनि ।जग मोहन मुरली भई छुड़ावत ध्यान मुनि ।।

बाजत पटह निशान अरु कण्ठ ताल धरी ।वीच मृदुल मुख चंग उपंगन सुरति करी ।।

रतन जटित पिचकारी केसर घोरि भरी । उड़त अमित गुलाल अंवरगति अरुनकरी ।।

बोले सुबल श्रीदामा श्रीमुख स्याम कह्यो । चलि बरसानें जांय श्री राधा जाय गहो ।।

गावत अगणित गोप चले सब रंग भरे। बोलत हो हो होरी श्रीराधा द्वार खरे ॥

श्रवण सुनत सब नारी द्वारन झुंड भई । अनेक अरगजा घोरि सनम्मुख स्याम रही ॥

धाय गहे बलवीर थीर मन कछु न रही।चंदन वंदन रोरी कपोलन लाय गही ।।

दृगसों कजल लावति गावति गारी खरी ।मृगमद चंदन कुंकुम डारत माट भरी ॥

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

बेनी बनावत सीस हरिजू के हाथ गये।श्री राधा बदन निहारत बारत प्रानदये ।।

मोहन दीनी सेन बलदाऊ जाय गये ।फगुवा देहु मंगाय युवतिनयोंजु कहें ।।

मोहन मनहिं विचारिकें बलिहि बचाय लये ।जो मांग्यो सो दीनों मोहन मगन भये ।।

ब्रजही चले व्रजराज गावत रंग भरे ।देत परस्पर गारि द्वारें जाय खरे ॥

यह लीला रस सिन्धु को कवि वरनि सके ।दास गदाधर जाय निरखत नयन थके ॥

।। 14 ।।

रंग हो हो हो होरी खेलें लाड़िली वृषभान की ।

गोरे गात समात न शोभा मोहनी स्याम सुजान की ।।

अरगजा भरी फवी सारी अति कचुंकी परम सुहावनी ।

वेणी सरस गुही मृगनयनी प्रीतम हित उपजावनी ।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

वारों मृग खंजन अंजन युत नयन बने अनियारे।

जिनकी तनक कटाचा भये वश गिरिधर रूप उजारे ।।

विद्रुम अधर मधुर मृदु-मुसकन बोलन हित रस भीनी ।

लोल कपोल अमोल अलक झलकत पुलकित अति झीनी ।।

श्री मोहनजू के सुखके हित नखसिख भूषण कीनें ।

कंचन मणि रतननसों खचित शोभा प्रति अंगन दीनें ।।

सज सिंगार सुकुमार कुंवरि खेलन निकसी अति सोहे ।

हम न भई सहचरियां कहत लखि सुरबनितनि मनमोहे ॥

संग अलि रस रंगरली एक एकते रूप उजारी ।

ऐसी कौन तरुणी त्रिभुवन में जिन देख न देह बिसारी ।।

एक भरी शोभा सुख बिलसत फूलन की गेंदुक लीनें ।

एक लीनें फूलन की छरी मृगमद केसरसों पटभीनें ॥

एक भरी अनुराग फागलीने पोहोप पराग सुहाई ।

एक लीये है गुलाल बहुवरण वरण एकदाई ।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

कंचनके कलशन केसररंग संगलीयें बहुदासी ।

और विविध रंगलिये सोहत दोहन जहां कमलासी ॥

गावत मिल मधुरेस्वरसों शिवक्रोधदग्धसुनमदन जियो ।

बाणी हूं धरणी घरी बीणा थकित भई गयो मोहि हियो ।

हसत लसत दरसत मुख शोभा बरषत सुखकी रासी ।

हरि सुखचन्द्र चकोर भई ब्रेज युवतिनकी अखियां प्यासी ।।

सुन ध्वनि श्रवण लाल मनमोहन सखन सहित खेलनकू आये ।
बाढ़यो अतिरसरंग परस्पर भयौहै सबन के मन भाये ॥

दुहुं दिशतें भरभर रंगन छूटी छबिसों बहु पिचकारी ।

भीज लगे वागे अंग अंगन उत भीज लगी अंगनसारी ॥

तब आलीन झारिन भरभर बहु अवीर गुलाल उडायो ।

व्है रही धू'धर सुगन्ध महा भई धरणी अरुण अम्बर छायो ।

बाजत विविध पखावज आवज बहुरंज सुरज डफ ताल घने ।

लटक लटक अंसन भुज धरधर नाचत गावत ग्वाल बने ।।

भरत भरावत रस उपजावत भाजत राजत भांत भले ।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

मार करे नवला कमलासी भांमिनि भ्रह नचाह चले ।।

छिरकत नवल वधू नव रंगन नवल लाल तन मन हुलसे ।

मानो नवलप्रेम बेलिनपर नवलनीर नीरद बरषे ॥

मृगमदभर पिचकारी लाल प्यारीजू सरससनेह नए ।

भीजेचीर लागे अंगन अंगन अवलोक सरससुख नयन लए ।।

तब दौरि गुलाल धू'धर कर जे चितवत चित्त विचित्र करखे ।

घेर लिये घनश्याम भामिनी दामिनीसी तन मन हरखे ।।

एक अरगजा मांडत मुख सुख भर आंजत लोचन छविसों।

एक मांगत फगुवा भुज-गह-गह मो छवि कहि न परत कविसों॥

कहि न परे उर अति सनेह भयो प्रकट कुसुम जल विमल लियो।

केसर घोर प्रिया पिय ऊपर डारत उठ्यो हुलास हियो ।।

बिहस उठी दे ताल सखी सब कहत भई हो हो होरी ।

गदाधर प्रभु यह सदा विराजौ गौरस्याम सुंदर जोरी ॥

।। 15 ।।

चलोरी होरी खेले नंदके लालसों ।

रंग रंगीलो छैल छबीलो मोहन मदनगोपालसों ।॥

मृगमद अबीर अरगजा केसर फॅट जुभरी हे गुलालसों ।

रु'ज मुरज आवाज बाजें रंग रह्यो करतालसों. ।।

छिरकत भरत परस्पर संब मिल लाल हसत ब्रजलालसों ।

चंद्रावलि बलि राममुख मांड्यो लटकत गजगति चालसों ॥

राधाजू अचानक आयगहे हरि बंदी लागी भालसों ।

विप्र गदाधर मुख सुख निरखत सुख पायो दीनदयालसों ।।

।। 16 ।।

देखो देखो व्रजकी बीथनि बीथिनि खेलत हैं, हरि डोरी ।

गीत विचित्र कोलाहल कौतुक संग सखा लख कोरी ।।

आई भूमि भूमि झु ंडन जुरि अगनित गोकुल गोरी ।

तिनमें जुवती कदम्ब शिरोमनि राधा नवल किसोरी ।।

छिरकत ग्वालबाल अबलन पर चूका बंदन रोरी ।

अरुन अकास देखि संध्या भ्रम पुनि मनसा भई बौरी ॥

रपटत चरन कीच अरगजा की केसरि कुकुम घोरी ।

कही न जाय गदाधर पै कछु बुधिचल मति भई थोरी ॥

।। 17 ।।

मिलिखेले फाग बनमें वल्लव बाला ।

संगखरे रसरंगभरे नवरंग त्रिभंगी लाला ।।

बाजत बांसरि चंग उपंग पखावज आवज ताला ।

गावत गारी देदे ब्रजनारि मनोहर गीत रसाला ।।

सीचत रंगनि अंग भरे वढयो प्रेम प्रवाह विसाला ।

मैन सैन खुररेनु उड़ी नभ छायो अचीर गुलाला ।।

कंचन बेलि करे जनु केलि परी बीच श्यामतमाला ।

धाइ धरे हँसि अंक भरे छुटे केश टूटि उरमाला ।।

देखि थकी भँवरी सबरी मृगि मोरि चकोरिनि जाला ।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

राधिका कृष्ण विलास सरोवर गदाधर मानो मराला ।।

<u>।। 18 ।।</u>

रगमगे स्यामल अंग रगमगी कुंकुम खौरी।

रगमगी पाग सुरंग रगमगी पींत पिछोरी ।।

पत्रन परसि फहरात चन्द्रिका रंग बिरंगी ।

दृष्टि नहीं ठहराति देखत अतिहु बिचंगी ।।

बदन सदनं आनन्द कहुं उपमा नहि पैयै ।

बारत कौटिक चंद मनमें अधिक लजैयै ।।

झलकत अलक ललाट तिय जियकी फंदवारी ।

तिलक काम की बाढ़ जनु विधि आप संवारी ।।

सोहैं मोहे अराल में अलि पंगति जानी ।

लोचन लोल विसाल सुन्दरताकी रजथानी ।।

कुंडल मकराकार जगमग जगमग जोती ।

सुन्दर सजल सुडार सोहत नासाको मोती ॥

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

दसन वसन सुरसाल हसनि लसनि सुखदाई ।

दसन घसन सुरसाल उपमतउनपाई ।।

दुलरी कनक सुकान्ति नातर चंपकली है।

उर पदकनिकी पांति राजत भांति भली है ।।

गज मोतिन को हार सोभा सुखद सुहाई ।

नील घरापर धार सुरसलिता की जनु आई ।।

भुज भुजंग अंगद छबि पौंचिनि के फु ंदन ।

करि विचार हारे कवि जे सब उपताके षु'दन ।।

कटि पट कंनक किंकिनी रनझन-स्नझन बाजें ।

पग नूपुर धुनि सुनि-सुनि कलहं मनि कुल लाजें ।।

अंग-अंग अनुपम भांति बानक बनी चटकीली ।

मद गयंद दुरिजात देखत गति लटकीली ॥

उपजत अगनित भांय व्रजजन नैन सुखदीनों ।

मुरली मधुर बजाइ सब जगु बसकरि लीनों ॥

ऐसो रूप अनूप नैननि देख्योई भावै ।

सकल फनीगनभूप वरनत अन्त न पावै ॥

मेरी मति अतिथोरी वरनत अतिहि अपार ।

तदपि गदाधर गावत उपजत आनन्द की थार ।।

।। 19 ।।

सुन्दर स्याम सुजान सिरोमनि देऊँ कहा कहि गारीजू ।

बड़े लोगके औगुन बरनत सकुच होत जिय भारीजू ॥

को करिसके पिताको निर्णय जाति-पांति को जानेंजू ।

जिनके जिय जैसी बनि आवे तेसी भांति बगानेंजू ॥

माया कुटिल नटी तन चितयो कौन बड़ाई पाईजू ।

उन चंचल सब जगत विगोयो जहां तहां भइ हंसाईजू ॥

तुम पुनि प्रकट होइ बारे ते कौन भलाई कीनीजू ।

मुक्ति वधू उत्तम जन लायक ले अधमन कों दीनीजू ॥

बसि दस मास गर्भ माता के उन आसा करि जायेजू ।

सो घर छांडि जीभ के लालच हूँ गये पूत परायेजू ।।

बारहीते गोकुल गोपिन के सूने गृह तुम डाटेजू ।

ह्वै निसंक तहां पैठि रंकलों दधिके भाजन चाटेजू ।।

आपु कहाय बड़ेके ढ़ोटा भात कृपनलौं माग्योंजू ।

मान भंगपर दूर्जे जाचत नैंकु सँकोच न लाग्योंजू ॥

लरिकाईते गोपिनके- तुम सूने भवन ढंढोरेजू ।

जमुना न्हात गोप कन्यन के निपट निलज पट चोरेजू ॥

बेनु बजाय, विलास कियो बन बोलि पगई नारीजू ।

वे बातें मुनिराज सभामें हूँ निसंक विस्तारीजू ॥

सब कोउ कहत नन्दबाबा को घर भरयो रतन अमोलेजू ।

गरेगु'जा सिरमोर पंखौबा गायनके संग डोलेजू ॥

राज सभा को बैठन हारो कोन त्रियन संग नाचेजू ।

अग्रज सहित राजमारग में कुबिजा देखत राचेजू ॥

अपनी सहोद्रा आपुही छलकरि अर्जुन संग भजाईजू ।

भोजन करि दासी सुत के घर जादों जाति लजाईजू ॥

लै लै भजे राजन की कन्या यह धों कोन भलाईज ।

सत्य भामाजू गोत में व्याही उलटी चाल चलाईजू ॥

बहिनि पिताकी सास कहाई नैकहु लाज न आईजू ।

एते पर दीनीजु विधाता अखिल लोक ठकुराईजू ।।

मोहन वसीकरण चट चेटक जंत्र मंत्र सब जानेंजू ।

तातें भले भले करि जाने भले भलें जगमानेंजू ॥

वरनों कहा यथामति मेरी वेदहू पार न पावैजू ।

भट्ट गदाधर प्रभुकी महिमा गावत ही उर आवैजू ॥

।। 20 ।।

।।अथ बसन्त लीला।।

समय बसंत अनन्त सुख उपजावत ब्रजनार।

चलीं प्रिया के भवनकों नव सत साज सिंगार ।।१।।

जुरीं नवल ब्रज नागरी भई तहां अति भीर।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

पिया मिलन की चाहना उपजी गौर शरीर ।।२।।

<u>(राग बसंत बहार वा जंगलाको)</u>

ललिता लाउ रसिक बनवारी।। टेक ।।

नव बसंत नव पल्लव विकसे लता पता छबि दरसत भारी ।।

नव निकुंज नव पक्षी बोलत फूली विपिन नई फुलवारी।

ललित लड़ैती हरष बढ़ावै बिहरें बन एरी सुकुमारी।।3।।

<u>(राग बसंत बहार)</u>

चलौ प्रिया वृषभानुनन्दिनी कबसों बाट तिहारी जोहत ।। टेक ।।

नव निकुंज बन नई ऋतु आई नव सिंगार सखियन तन सोहत।।

नव पल्लव बिकसे बन बागन नव बहार सबके मन मोहत ।

बोले श्याम हमें नहिं औसर ललित लड़ैती हियो टटोहत ।।4।।

आदि अन्तलों सब कथा कही प्रिया पै जाय।

सुनतहि रिस भई भृकुटी लई चढ़ाय ।।5।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

एक सखी जा पिया सों कही सहित विस्तार।

या बिरियां कीरति कुमरि बैठी रिस उरधार ।।6।।

रचत इलाज मिलन प्रिया सोचत चित चितचोर ।

छबि रस उठत तरंग उर जाको ओर छोर ।।7।।

<u>(राग बसंत)</u>

देख बसंत समय नट नागर छबि सागर ब्रजराज दुलारे।

बेंदी भाल द्रगन दे काजर पट भूषणसों अंग सँवारे ।।

मालिन भेष बनाय रसिक पिया फूल सिंगार कमल कर धारे।

ललित लड़ती ठुमकि चलत मग पहुँचे जाय प्रियाके द्वारे ।।8।।

देख भीर ब्रज नागरी नागर नट नंद नंद।। टेक ।।

अलवेली छबि लखि दृगन उपज्यौ परम अनंद।।

उपजौ परम अनंद भामिनी रूप ललित हरि।

चली चपल नव नारि फूल सिंगार लियें कर।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

युवतिन यूथ निवारिके ले दोना सिंगार सब

ललित लड़ैती तन सज्यो शोभा वरणे कौन कब ।।9।।

<u>(ध्रुपद कान्हड़ा वा सिंदूरा)</u>

फूलन की चन्द्रकला फूलन को बिंदा भाल.

सीस फूल फूलनकौ झूमका फूलन प्यारी। । टेक ।।

फूलन की बेसर विशाल नथ फूलन की,

फूलन की चूंदरी देत सीस शोभा भारी ।।

फूलन हमेल उर हार हिये फूलन के,

फूलन की कौंधनी ललित कटि तट धारी।

फूलन के बाजूबंद फूलन के गजरा,

ललित लड़ैती मानो फूली फूल फुलवारी।।10।।

हेली पुनि कीनो कहा चपल साँवरी नार।

श्रवण सुनत नहिं तृप्त हुँ रस बतियां सिंगार।।11।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

(ठुमरी खम्माच का जि०)

पुनि लई दोऊ कर वलैयां साँवरि सुकुमारी री।। टेक ।।

कंज प्रफुल्लित कर परसायो कपोलन पे,एक संग उठी लहर रूप सिंधु भारी री।।

देखि छबि अनूप अंग उमगी उर प्रीति बेलि, नैनन सों नैन अड़े सुरति तन बिसारी री।

ललित लड़ैती छल जानि दई टेर सखी, निरखतही कौतकिन उघरी बात सारी री।।12।।

(ठुमरी खम्माचका जिला)

प्यारी ये मालिनिया तिहारे छलिवे काज आईरी।। टेक ।।

सारी जरतारी सीस भूषण जड़ाऊ अंग, अधर ललाई पान अति छबि छाईरी ।।

जादू भरी हँसन दसन दुति दामिन सी, देखि कौन माननी जो मान न भुलाईरी।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

नैन रेख काजर चपल पियालाल के से, ललित लड़ती है यह कुमर कन्हाईरी ।।13।।

<u>(राग बसंत)</u>

मालिन भेष देखि निज प्रीतम अचरा मुख दै हँसी प्यारी।।टेक।।

तजके मान मानिनी बोली निरखो आज विपिन छबि न्यारी।।

कुंज कुंज दुम बेलि प्रफुल्लित नव पल्लव की शोभा भारी।

नई बहार बोलत पक्षी दुम फूल रही उत नई फुलवारी ।।

भामिन भेष बढ़ाय आपनो धरो रूप निज रसिक बिहारी ।

ललित लड़ैती नव बसंत सुख मिलि दोऊ बिलसें बलिहारी।।14।।

मृदु मुसकिन में रहैं भरे निरन्तर तिहारे अधर प्यारी।। टेक ।।

फिर करके न रूठौ कबूं सपनेहू न कीजे मान दीजे वरदान येही गोरी भोरी सुकुमारी ।।

तेरोरी मुखारबिंद सरद चन्द छबि निकन्द मेरे, दृग चकोर सदां निरखवे के अधिकारी ।

ललित लड़ती जोरी रची विधि हमारी भली, त्रिभुवन को प्यारी हितकारी सुख दैन हारी।।15।।

गाई यह लीला नई ललित बसंत बहार।

याके पढ़े सुनें मिले गुप्त रहस्य को सार ।।16।।

।। 21 ।।

क्योरे छैल मेरी नई चुंदरिया लेकें तैं रंग बोर दई।। टेक ।।

देखेंगी सास रिसायगी मोप अब तो बात चलैगी नई ।।

मति मारौ अब दृगन कुमकुमां नहिं तेरी कछु मोल लई ।

ललित लड़ैती बढ़ो न बातन भली बुरी जो भई सो ई सो भई ।

।। 22 ।।

जोबन मौर, रोमावलि बल्ली सुफल फली, कंचुकी बसंत ढाँपि, लै चली बसंत-पूजन ।

बरन-बरन कुसुम प्रफुल्लित नव अंब-मौर, ठौर-ठौर लागीरी कोकिला कूजन ।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

बिबिध सुगंध संभारि अरगजा, गावत रितुराज राग चलीं ब्रजबधू बन ।

'सूरदास मदमोहन' प्यारी ओर पिय सहित, चाहत कुसल सदा दोऊ जन ।।

<u>।। 23 ।।</u>

मधु रितु जो इच्छा वर कियौ स्याम कौं, ताकौं देखन कौं पठई प्रथम चतुर पिक अली ।

रीझि मदनमोहन संग सोहन नवल जाइ कह्यौ, जैसौ देख्यौ नैनन तैसी वाढ़ी अबला बल्ली लली ।।

सु नछत्र पंडित लगन धरी श्री पंचमी सगाई आई, मोर-बधू रूप वारी, बन-उपवन द्रुम नव पल्लव पहिरि चली ।

आगौनी कास्न भँवर गुंजार नाद-धुनि,पुहुप-वाटिका सखी प्रफुलित आनन कमल-कली ।

उठि चलि बेगि, मिलि 'सूरदास मदनमोहन',सीतल मंद सुगंध पवन चली।।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 24 ।।

वन-बन खेलन चली कमल-कली विकसि, हँसि अनुराग भरी ब्रज-नारी ।

अपुने-अपुन घर तें निकसि एक ठौर भई सकल, फूलि परी मानों फुलवारी ।।

तरु तमाल लाल मध्य ठाड़े राजति, चहुँ दिसि तें कनक-बेलि, गोपी भरि भाजन ल्याई, मानौं आगै-पाद्यै पबन डुलावै बनबारी। 'सूरदास मदनमोहन' अंग संग बसंत सोहै, अनंग अदभुत बारि संबारी ॥

।। 25 ।।

हो-हो हो हो होरी बोलै । गोरस की री माँतों डोले ।।

ब्रज के लरिकन संग लिएँ डोलै। घर-घर के री खिरका खोले ।।

जो कोउ डरपि जाय घर बैठे। कर वरजोरि ताहि के पैठे ।।

आय अचानक अंखियाँ मींचे। रूप-सुधा रस नैनन सींचे ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

गनत नाँहि प्रमुदित नर-नारी। बचत नाँहि बिन दीए गारी ।।

कुमकुम-कींच मची अति भारी । उड़ि गुलाल अटे अटा-अटारी ।।

अलिकाबली सिथिल अति राजत। धावत मत्त गयंद लजावत ।।

ब्रज में डोलत भूल्यौ-भूल्यौ। भ्रमर उड़े मानों अंबुज फूल्यौ ।।

ब्रज-जुबती मोहन गहि आने। कुमुदिन मानौं भ्रमर लुभाने ।।

तारी देय घेर जब लीने।क्यों छूटो बिन फगुवा दीने।।

गुंजाबली मुक्ताबाली टूटे।पीताम्बर गहने दै छूटे।।

सखि सखा मिली खेलै होरी।कहा बरनो री मो मति थोरी।।

खेलत फागु बढ़्यौ सुख-सागर। सूरदास मदनमोहन नागर' ।।

।। 26 ।।

(राग धनाश्री)

होरी के खिलार भावते. यो हो जान न देहों ।

रंगभीने बानक बनि आये, जागे हो भाग हमारे, नैननि मैं भरि राखौं, फगुवा न लैहों ।।

न्यारे ह्वै मुख माँड़िहाँ, अँखियन अजैहौं,

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

बीरी पलटि न लेहु और सौं काहू की, प्यारे औरै भरन न वैहीं, न्यारे ही खिलैहौं ।

मोहन मूरति साँवरी हँसि हुदै लगैहीं,

'सूरदास मदनमोहन' संग हिलि मिलि दोऊ, जल की तरंग जैसे जल ही समैहौं' ।।

<u>।। 27 ।।</u>

<u>(धमार राग गौरी)</u>

खेलत हैं हरि हो-हो होरो । ब्रज-तरुनी रससिंधु झकोरी ।।

बाला वयसंधी नव तरुनी। जोवन भरी चपल दृग हरनी ।।

नवसत सजि गृह-गृह तें निकसीं। मानहु कमलकली सी विकसीं।।

पिक बचनी तन चंपक बरनो । उपमा कौं नहिं मनसिज धरनो।।

बरन-बरन कंचुकि अरू सारी । मानहुँ काम रची फुलबारी ॥

द्वादस आभरन सजि कंचन तन। मुख ससि आभूषन तारागन।।

मानों मनोभव मन तें कीनीं। और त्रिभुवन की सोभा लीनीं।।

देखत दृष्टि न छिन ठहराई । जनु जल झलमलात रवि छांई ।।

ताल मृदंग उपंग बजावत । डफ आवज सुर एक सजावत ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

मधुरितु कुसुमित बन भई बौरी। गावत फाग राग रति गौरी ।।

आई सर्व नंद जू के द्वारै । श्रगनित कलस सुगंध संभारै ।।

भूमि-भूमि भूमक सब गावत। नमित भेद दुहुँ दिसि तें श्रावत ।।

रस-सागर उमग्यौ न समाई। मानहु लहरि चहुँ दिसि धाई ।।

खोर खिरक गिरि जहाँ हीपावें । धाय जाय ताहीं गहि लावें ।।

करि छाँड़त अपनौ मनभायौ । उड़त गुलाल सकल नभ छायौ ।।

मोहन आय द्वार तें झाँकें । दूर भये तब जुवतिन ताके ।।

एकहि बेर सबै जुरि घाई । पौरि तोरि मंदिर में आई ।।

मोहन गहत-गहत छुटि भागे । पीतांबर तजि तन भये नाँगे ॥

दौरि अटा चढ़ि दए हैं दिखाई। मानौं स्याम घटा घिरि आई ।।

सुंदर स्याम मनिगन तन राजे । गिरा गंभीर मेघ लौ गाजे ।।

टेरि-टेरि पीतांबर मांग। गोपो कहैं आउ लेहु आगै ।।

पीतांबर राधिका उढ़ायौ । हरिजू निरखि परम सुख पायौ ।।

पीतांबर तहाँ सोभा पाई। घन तजि दामिनि खेलन आई ।।

तहिं अरगजा स्याम मँगायो। अपने कर वर घोरि बनायौ ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

ऊंचे चढ़ि घन लौ बरसायौ । धाराधर जानौं ऊंवें आयौ ।।

तब इन जसुमति ठाड़ी पाई। सौंधे गार्गार सिर तें नाई ॥

उततें निरखि रोहनी घाई। बिच ठाड़ी ह्व महरि बचाई ।।

आँगन भीर भई अति भारी। जसुमति देत दिबावत गारी ॥

गोपिन नंद दुरे गहि काढ़े। कंचन गिरि से आँगे ठाड़े ।।

जनु जुबती ऐरावत लाई । पूजति हस्ति गौरि की नाई ।।

नंद--जसोदा गौरा--गौरी। छिरकति चंदन बंदन--रोरी ॥

पूजि-पूजि माँगत वरमोहन । बिन पाये छाँड़त नहि गोहन ।।

एक कहति मोहहिं बतावहु । तब तुम हम पै छूटन पावहु ।।

एक सिखावत, एक बचावत । तारी दै-दै एक नचावत ।।

एक गहे कर फगुवा माँगे । एक नैन काजर दै भागै ।॥

बसन आभूषन नंद मंगाए। दये सबन जैसे जाहि भाए ।।

देत असीस चलीं ब्रजबाला । जुग जुग राज करो नंदलाला ।।

मदनमोहन पिय के गुन गावै । सूरदास चरनन रज पावै ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 28 ।।

(राग धनाश्री)

हो हो होरी बोलही, नवल कुँवर मिलि खेलें फाग । आगग सुनि ऋतुराज को, उपज्यो मन में अति अनुराग ॥१॥

बरस दिवस लागी रहे, या सुख की आसा जिय माँहि । जो क्यों हूँ विधिना रचै, सबै द्योस होरी है जाँहि ॥२॥

अति हुलास दिय में वढ्यो, अब कापै यह रोक्यो जाय । उमगि चल्यो रस सिंधु ज्यों, अपनी मर्यादा विसराय ॥३

सुबल सुबाहु सखा सबै, जोर लियो निज संग समाज । अपने अपने घरन ते निकसे कर खेलन के साज ॥४॥

एक सखा हो हो करें, एक करे कछु उलटी रीत । मधुगंगल नाचत चलें, गाबत है होरी के गीत ।।५।।

एक दिगम्बर रूप धरे, नख सिख अंग विभूत चढ़ाय ।एक कोउ कामिनी भई, चले दुहुँन की गांठ जुराइ ॥६॥

ताल पखावज बाजहीं, बाजत रुज मुरज सहनाइ । ढफ दुन्दुभी अरु झालरी, रह्यो कुलाहल सब व्रज छाइ ।।७।।

सैनन ही में साँवरे, कह्यो सबनि सों यों समुझाय । आज भैया या साज सों, खेलें बरषाने में जाय ॥८॥

आये बट संकेत में, तब कीनी मुरली की घोर । अवन सुनत प्यारी राधिका, चोंकि परी चित रह्यो न ठोरि ॥६॥

निकसी संग समाज लें, खेलन को सत्र साज बनाय । पावस की सरिता मानों, उमँगो रस सागर को धाय ॥१०॥

एकन कर गेंदुक सोहै, एकन नवला सी बहु रंग । फु'इनि मिलि गावत चलो, भोरिन भरी गुनाल सुरंग ॥११॥

सुरमंडल और सारंगी, बीना बहु संग मुधुर मधुर सुर बाजहीं, मदन भेरी डफ चंग उवंग ॥१२॥

बाइ प्रिया पहुँचो जहाँ, खेलत नन्दकिशोर । मानों समर संकेत में, रुपे सुभप सन्मुख दोऊ और ॥

विविध भाँति फूजन गुही, पहले गेंदुक दई चलाइ । मानौरस संग्राम की, आगे दई बसीठ पठाइ ।।

पिय पिचकारी पुरि कै, दई प्रिया ऊर ऊपरि तानि । अगर अरगजा घोरि के, मुख साँधो लिपटाइ खानि ॥

छिरकत चहुँ ओरतें मनहु, मेघ उमडे हु जलरास । गौर घटा अरु साँवरी, वषेत केसर नीर सुवास ॥ 11

सब सखियन ढिंग श्याम के, दीनों लाल गुलाल उड़ाय ।दुरि पाछे है घात सों, गहे कुँवर मन मोहन आय ।।

एकन कर गाढी गही, एक बनावत चित्र कपोल । एक निडर आँजन लगी नैन कमल दल परम सलोल ।॥

इक सन्मुख मुख चाह हीं, एक कहति करि चिबुक उठाय ।बहुत दिनन ते आज ही, अब बस परे हमारे आय ।।

बहुत कहावत हो आपुन को, आज बढ़ों जो जाह छुडाय ।एक बैननि गारी गावै एक कहत सैननि मुसकाय।।

दए सखिन मिलि श्याम के, केसरि कलस सीस ते ढारि ।एकन मुरली हरि लई एकन मोतिन माल उतार ॥

नब केसरि मुख गाँडिकें, इक नाचत हैं दे दे करताल ।कजरा आँखिन सारि के, हँमि बोली इक सुंदर बाल ।।

एकन गहि बेनी गुही, एकन मोतिन माँग संवारि ।चरजन पर कंचुकी कसी, तापर मोतिन माल सुढारि ॥

तनसुख की सारी अति झोनी, अरु लोनी सोधे सों सानि । अगर अरगजा वोरि के, पहिरावत श्रीतम को आनि ॥ २४॥

नूपुर कंकण किंकिणी नख. सिख भूषण साज शृंगार। खो मुख देखे हीं बनें, अद्भुत सोभा बढी अपार ॥२५॥

कर पकर धरि लै चलीं, बैठारी प्यारी ढिंग जाय। आई नई यह सहचरी, चाहत है देखन को पाँय।।

अति प्रत्रीन गुण आगरी, वीण बजावत परंम अनूप । सेवा अंग सिंगार में, सुघर सखी साँवरी स्वरूर ।।

उत्कंठा तुम मिलन की, लागि रहत याके जिय माँहि । हँसि भेटहुँ दोउ अ'क भरि, जैसे तन मन चैन सिराइ ॥

अति द्यानन्द हुलास तें मिलि, सखी दोऊ भरी अफवारी । जर जानयो यह भेद कछु तबहिं सकुचि मुसकाइ निहारी ॥

जो आनंद उर में वाढ्यों एक रसना बरना नहि जाय । दिन दिन यह सुख दुहुँन को, निरखि माधुरी चैन सिराय ॥३०॥

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 29 ।।

होरी खेलत श्री सचिनंदन ।

अपनी रसिक मंडली के संग, गावत गीत सुछंदन ॥

डफ-बीना-मुरली मिल बाजत, नव करताल-मृदंगन ।

बीच-बीच पिचकारी छोड़त, बोरत रंगन अंगन ।।

अबीर-गुलाल-कुमकुमा भर-भर, चोबा-चंदन बंदन ।

एक एक पर देखि-देखि कर, डारत हैं सुख कंदन ॥

राधा-स्याम नाम धुनि बोलत, और नाँहि अनुसंधन ।

सो सुख निरखत 'श्री गोपाल भट्ट', प्रभु कटाक्ष गुन बंदन ।।

।। 30 ।।

एरी सखी, गौरचंद्र नटराज संग लिए भक्त समाज रो ।

एरी सखी, होरी खेलत आज श्री नवद्वीप के माँझ री ॥

एरी सबो, रसमय नित्यानंद श्री अद्वैत रसवृंदरी ।

एरी सखी, गावत गीत सुछंद उपजत आनंदकंद री ।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

एरी सखी, ढोल खोल करताल बाजत मुरली रसाल री ।

एरी सखी, डफ बुंधकार बिसाल नाँचत दै-दै ताल री ।।

एरी सखी, केसर रंग कमोर भरी धरी चहुँ ओर री ।

एरी सखी, पिचकारिन कों छोरि देत हैं तन-मन बोरि री ।।

एरी सखी, झोरिन उड़त गुलाल, भई सकल दिस लाल री ।

एरी सखी, खग-मृग-नर-द्रुम-डार, लाल भुवन गलियाल री ।।

एरी सखी, पुनि हरि हरि धुनि बोलत हैं सब बहुगुनी ।

एरी सखी, मोहे सुर-नर मुनी, और बात नाँहिन सुनी ।।

एरी सखी, उमग्यौ सागर प्रेम, लखि प्रभु तन छबि हेम रो ।

एरी सखी, विगलित है सब नेम, याही रस में क्षेम री ।।

एरी सखी, 'श्री गोपाल भट्ट' श्राय, निज गुन मोहि बुलाय री ।

एरी सखी, दियौ मधुर रस पियाइ, और कछु न भाय री ॥

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 31 ।।

खेलत गौर प्रेम भरे होरी ।प्रगट कियौ आपन मन चोरी ।।

ताल मृदंग झाँझ डफ बाजे ।हिये भाव सब संग बिराजै ॥

नैन अरुन अनुराग में बोरे ।पिचकारी चहुँ दिसि ते छोरे ॥

सोहत चारु चोर अति राते ।लग्यौ गुलाल रोरी रंग माते ।।

केसर केस हरव रस भरे ।छाइ रहो तन पीत दुति घरे ।।

पुलक कदंब कुसुम तन सोहै ।देखत सुधि-बुधि 'मदन' की मोहै ॥

।। 32 ।।

गौरचंद्र वर देत हरष निधि, बन के बसंत मिलि खेलै ।

रसिक चकोर नैन हेरत रूप, पान करत मन झेलें ॥

मृग मद साखि जवादि अगरसत, श्ररत-परस सब मेलें ।

भर भर मूंठ गुलाल उड़ावत, अरुन भये तम चेले ॥

हँसत. अधर तव बेनु मधुर मुख, करत विविध रस रेलं ।

पुष्पन वृष्टि करी नभ देवन, 'मदन' मुदित रंग रेलें ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 33 ।।

देखौ सुंदर गौर नगर नदिया में खेलत है बन होरी ।

चंदन खौरि किये मुख पानन, कहत कहावत होरी ॥

बाजत ताल मृदंग अधौटी, ढोल धमकि धुनि घोरी ।

राग - रंग गहगह्यौ मच्यौ है, कानन सुनियत थोरी ॥

सुनिवे टोल टोल ते आये, भक्त वृंद सब जोरी ।

अबीर उड़ावत भरत परस्पर, भये सबन मन भोरी ॥

खेलत खेलत गंग पुलिन महें, आय भये एक ठौरौ।

करत किलोल लोल सब अंतर, 'मदन' वारत तृन तोरी ॥

।। 34 ।।

खेलत बसंत श्री गौर चंद। प्रिय संग गदाधर प्रम कंद ।

नाँचत नित्यानंद प्रभु रसाल । प्रभु श्री अद्वैत देत ताल ॥

गावत हैं दामोदर स्वरूप । रामानंद सुर सों मिलि अनूप ॥

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

झेलत अनुरागी रसिक वृंद । तन मन बाढ्यौ है अति आनंद ।।

बाजत करताल मृदंग बीन। मुरली ढप सुर मंजीर लीन ॥

सोहत हैं बसन बसंती अंग। तिन ऊपर सोहित बिबिध रंग ॥ श्री

राधे-राधे ध्वनि गुलाल । कुमकुम भर-भर भई हैं उछाल ।।

गुनमंजरि श्री गोपाल भट्ट । यह लिखि दीनों है भाल पट्ट ॥

जै जै श्री कृष्ण चैतन्य चंद। मूरति बसंत प्रीति रस कंद ॥

विकसित तन बन मानों अरबिंद । भाव कुसुम सोभा हाँसि

मकरंद नवपल्लव अनुराग श्रमंद।विलसेंकोकिल कुल सहचरिवृंद।।

करुना मलयानिल सीतल सुगंव। जगत सुबासित प्रेम प्रबंध ।।

अंग संग लसै सहचरि वृद। श्री रूप सनातन प्रबोधानंद ।।

त्रिभुवन प्रकासित पद-नख-चंद। देहु दरसन दीन "दामोदर' मंद ॥

<u>।। 35 ।।</u>

<u>(राग धनाश्री)</u>

अति सरस रच्यो वरषानो जू। राजत रमणी तर बानों जू ॥

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

जहाँ मणिमय मन्दिर सोहै जू । उपमाको रविशशि को हैं जू॥१॥जित होति कुलाहल भारी जू । मन मुदित सकल नर नारी जू ।। वृषभानु गोप जहाँ राजे जू । कीरत जाके जग गाजे जू ।। जब दिन होरी को आयों जू । न्योतो नंदगाँव पठायो जू ।।सुनि के मन मोहन धाये जू। सब सखा संग लिये आये ज् ।।श्रीजसुमति न्योति बुलाई जू । समधि समधाने आई जू ।।कीरति आगे हू लीनी जू । मनुहारि बहुत विधि कीनी जू ।! आवो निज भवन विराजो जू। बरषानों सकल निवाजौ जू ॥ अति कृपा अनुग्रह कीने जू । हम तो अपनें कर लीनें जू ॥१०॥ तुम तो सब की सुखदाई जू । मुख कीजे कौन बड़ाई जू ।। तुम तो यह निज व्रत लीनों जू। जिन जोई जाच्यो सोई दीनों जू ॥जस तुम्हरो जग जानै जू। इहि सुख कबि कौन वखाने जू ॥१३ जब कर गहि ढिंग बैठारी जू । गावें गारी ब्रजनारी जू ।।तुमको बूझे एक बाता जू। तुम साँची कह यह गाथा जू ।। जब गरग तिहारे आये जू । बहू नाम कृष्ण गुण गाये जू ।।सुनि वासुदेब करि लेखे जू । वसुदेव कहाँ, तुम देखे जू ।। यह सुनि सुनि बात तिहारी जू । अचरज उपजत जिय भारी जू ॥औरों शंका जी आवे जू। यह भेद न कोऊ पाये जू ॥अति साधु परम तुम पायौ जू।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

यह पूत कहाँ ते जायो जू ।। याके गुन रूप निहारे जू । यह मिलें न कुलहि तिहारे जू ।।हम सो सब लाज निवारों जूः । ऊंचे हें क्यों न निहारी जू ॥कछु कह्यो हमारी कीजें जू। हँसि के सब को सुख दीजै जू ।। रहिये कछु द्योस हमारे जू। हम तौ हैं सकल तिहारे जू ।।तुम दोऊ एकइ कर जानों जू । नंदगाँव सोई बरषानों जू ॥ जैसे कछु नंदहि मानों जु। तैसे वृषभानों हि जानौ जू ॥ दोउ हैं परम सनेही जू। ये एक प्राण द्वै देही जू ।।तब हँसी सकल ब्रजबाला जू। मुसके कछू नंद के लाला जू ॥सुन सुन जशुदा मुसकानी जू। बोली कछू मधुरी बानी जू ।।बसहि कछु द्योस तिहारे जू । कीरत चलि बसहु हमारे जू ।।तब हंसि सकल वृजनारी जू । जशुमति की ओर निहारी जू ।।वृज भयो कुलाहल भारी जू। नाचैहिं दे दे करतारी जू ।।यह रस बरसे वरषानें जू । बिन कुंवरि कृपा को जानें ज् ।।कीरत जशुमति जशु गायो जू। वृजवास माधुरी पायौ जू ॥

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 36 ।।

(राग बिलावल)

आगम सुन ऋतुराज को फूली सब वृजनारी जु । बरन बरन सिगार कैं तन चंदन चरचित सारी जू ॥१॥केसर चंदन वन्दना अरु, घसि लीनी रोरी जू।नव नबला सी फूल की, लियें फूल भरि झोरी जू ॥२॥ मंगल साजु सबै लिये सब, निकट कुँवर के आई जू । प्रथमहि दिवस वसंत कों, मन हर्षित देत बधाई जू ॥ गायें गीत सुहामनें मन, हर्षित नवल किशोरी जू।सब बृज कुशल समाज सों, फिर आई फागुन होरी जू ॥ताल मृदंग मिलि बाजहि, रुंज मुरज सहनाई जू।ढफ दु'दुभी अरु झालरी, मानों बाजत मदन बधाई जू ।।सुन सुन घोष कुलाहलें, जिय सब को सरसान्यो जू। गिरीधर के अनुराग सों, रंग भीज रह्यो बरषानों जू॥इहे विधि साज समाज ले, सब चली राय जी को पौरी जू।श्री राधा जी के लैन को, हँसि उठि नंदरानी दोरी जू ॥प्रथम हि केसर नीर ले, अंग चीर सबै रंग बौरे जू। मृगमद अरगजा घोर के, शिर भरि भरि गडुया बोरे जू ।।साँधो सुरंग गुलाल सों, बहु सखि जवाद मिलाए जू। दौर अचानक लाडिलो, हँसि महरि वदन लपटाये जू

।।छिरक्यो सब मिलि धाय कै, तब छलवल सौ उठ दौरी जू ।जान कुंवरि वृषभानु की तब, महरि लई भर कौरी जू ।।चुंबत चापति प्रेम सों हँसि, पुन पुन कंठ लगावैं जू।जो कछु आनंद जिय को, मुख कहत कह्यों न आयें जू ॥तब मन महि नाना भाँति के, बहु भूषण बसन मँगाये जू ।तो इन को हम लेहि जौ, कहो गिरिधर कहाँ दुराये जू ।।कछु उचहि चख चाहँ कें, महरि बदन मुसकाना जू।नागरी सब गुन आगरी, बात हिये की जानी जू ।।सब जुबती जानि धाय कें, तब जाय चढ़ी चित्र सारी जू ।सकुचत बदन दुरावहीं, हँस गहै जाय गिरधारी जू ॥ ।घेर लिये चहुँ और ते सब, छूटहूँ कहाँ पलानें जू।क्यों जुबतिन के बस परे, कहियत अधिक सयाने जू ॥कोउ बातें भेद की कहि, कानन में उठ दौरी जू।कोउ अचानक आय के तव, लाल लये भर कौरी जू ॥काहु नाता भाँति के रचि, चित्र कपोलन कीनो जू।काहु मरवट माँडि के मधि, बंदा रोरी दीनों जू ॥काहु नीकी भाँति सों, अंजन नैन बनायो जू ।एक सहज हीं चपल कुरंग से, अरु दरक अवन लौं आयौ जू॥काहू गहि गुथी बैनी, रच मोतिन मांग सँबारे जू।तन सुख की सौंधे भीनी, सुठि सरस बनाई मारी जू ॥ चम्पकलता चल आय के जब, चिबुक दिठौना दीनों जू। मोहि

रही सब मोहनी, जब रूप मोहनी कीनों जू ।।तव नाना बरण अबीर ले, दुरि मोहन बदन लगावे जू ।पूरण चंद मनों घन में,नव इन्द्रधनुष सो छावै जू ॥केसर ढोरी सीस तें भूमि, ढरि ढरि चले पनारे जू।सौधे सुरंग गुलाल सो, सब भरे घरनि के द्वारे जु ॥सन्मुख मुखहि निहार के सुख, निरखत कोउ न अघानी जु।गावहि गारी सुहावनी, अति रस सों लपटानी जू ॥तब आगे गहि मोहिनिहि, हँसत हँसत तहाँ आई जू ।घूंघट सो पट दापि कें, पर्गान महरि के लाई जू ।।यह कन्या काहु राय की तिन आय समरपन कीनी जू ।रूप बैस गुण श्याम के, जोट विधाता दीनी जू ॥हर्षित मन आनंद सो तुम, बाँटतु आजु बधाई जू ।विधि ते रूप उजागरी हम, कान्ह वधू ले आई जू ॥विहँसि वधू को नाम सुनि तब, महरि गोद बैठारी जू ।प्रमुदित अति आनंद सों कछु, विधि तन गोद पसारी जू ॥अंचल ओट पखार के कछु, मुख चुम्बत मुसक्यानी जू।हसि परसपर नागरी तब, देखत महरि लजानी जू ॥हो हो होरी बोलहीं, नाचत दे करतारी जू ।प्रमुदित करत कुलाहल, गावत सब बृजनारी जू ॥यह ब्रजे होरी खेल कों सब,सुख ते सुख न्यारो जू।यह समाज नित मधुती के,नेंक उरतें नहीं टारि जू।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 37 ।।

(राग काफी)

हो हो होरी बोलें ॥ ध्रु ॥

फगुवा मिस ब्रज सुंदरी, जसुमति गृह आई ।

गावत गारि सुहावनी, सब के मन भाई ॥

तब ब्रजरानी बोल के रावर में लीनी ।

मुसकि मुमकि कैं कहत हैं, बतियाँ रंग भीनी ॥

अहो जसुमति भोर ही, हम नोतें आँई ।

आज कछू वृषभान जी, तुम बोलि पठाई ।।

और तुम सो कछु कह्यो है, संदेश जु न्यारो ।

कन्या हमारी राधिका, हरि पति तिहारो ॥

मन वच क्रम करि कहत हैं, हम सोंह तिहारी ।

तुम लागत हम को सदा प्रानन ते प्यारी ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 38 ।।

मेरो नवरंग विहारी। बलि बलि जाँउ तिहारी ।।

लिये संग राधा गोरी । बोले सब हो हो होरी ।।

गावे गुन गीत रसाला । भावे मोहि नंद को लाला ।।

बाजे वहु भांति वजावे । नान रस रंग बढ़ावे ।।

टेढ़ी सिर पाग सवारी । नति भेद सो भारी ॥

सोधे मे भीना बागा । सारी रस रेनि निकागा ।।

सोभा कहां वेंन बखानें । माधुरी के नैन ही जाने ॥

।। 39 ।।

मेरे मन का मोहन सांबला । मेरे उर का लटकन सांवला ।।

हाथ वगुरीया उर वनमाल। चित चुभि रही तेरी लटकनि चाल ॥

मोर चन्द्रिका सोहति सीस । को न करें तेरी मुसकनी रीस ।।

माथे तिलक बन्यों है जराइ। चाहतहीं जु रह्यो ललचाइ ॥

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

अलकावलि सोभित वनमाल। लोचन लोभी तेरे परम रसाल ।।

बेससिरी की लवि नेकु निहार । विगरि गये सत्र तन के विचार।।

अधर अरुनता कही न जाइ । लोभी चित मेरो गयो ललचाइ ॥

चिवुक विठोना दियो बनाइ । दीठि लगे मन दिठिहि आइ ॥

करन फूल फूले बहु भांति । फोन्दा घले मधुपनि की पांति ॥

ग्रीवा वाल्हरी अरु कंट सिरी। वीच वीच मोतिनि की लरी ॥

बाहून बाजूबंद सुढार । उर सोहत मोतिन के हार ।।

अंगुरिनि मुदरी सोभित घनी। एक एक तें सु'दरबनी ।।

जगमगइ चाकी बहु रंग । फेलि रही सोभा सद अंग ॥

गुंजमाल सरस रस भरी। कबहुँ न निमिषन उरतें टरी ॥

कटि किंकिनि बाजनि बहु भांत । मानों आई मदन बरात ।।

पाइन नूपुर मधुरी चाल। वाजे वाजत परम रसाल ॥

नख सिख लों कीनो तन साज। मानों लटकत आवत गजराज ॥

कहत माधुरी बचन रसाल। हो बलि बलि तेरी मदन गुपाल ॥

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 40 ।।

रंग हो हो हो हो हो होरीयाँ।

उत बने नवल किशोर लालन पिय इत बनी नवल किशोरीयाँ ।।

वे नवनील श्याम घन सुंदर ए कंचत तन गोरीयाँ।

इनि के अरुन वसन तन राजत इनि के पीत पटोरीयां ॥२॥

एकनि कर गेंदुक नवलासी ओरु फूर्त्तन भरि झोरीयाँ।

भाजत राजत भरत परस्पर परीरंभन झक झोरीयां ॥ ३॥

राखि करनि दुराइ सबनि मिलि केसरि कनक कमोरीयां।

छैल बल सों दुरि मुख लपटावत चंदन वंदन रोरीयां ॥४॥

बाजत ताल मूढंग मुरज ढफ मधुर मुरली धुनि थोरीयां ।

नाचत गावत करत कुलाहल परम चतुर अरु भोरीयाँ ।।५।।

फेटनि भरे हे गुलाल बिबिध रंग अरगजा भरी कचोरीयाँ।

सनमुख दृष्टि बचाइ धाइ करि स्याम सीस पर दोरीयाँ ॥६॥

याही रस विलसो निसि वासर बंधे प्रेम की डोरीयां ।

माधुरी के मन सुख के कारन प्रगटी दे भूतल जोरीयाँ ॥७॥

।। 41 ।।

श्रीराधारमणजी नव बसंत खेलत वृन्दावन नित लसंत ।

प्यारीजी शोभित सखिन संग लखि नागर मन बादी उमंग ॥

अलबेली प्रथमही लै गुलाल मूठी भरि छोड़ी है मुखहि लाल ।

नागर मानत हैं धन्य धन्य सब रसिकन में हैं अग्रगन्य ॥

श्यामा मुख अतर लगाय गाय निरखत हैं शोभा समय पाय ।

सखियन पर दिये कुमकुमा दोर छवि को नहीं तहाँ ओर छोर ॥

बाजत बीणा मिरदंग ताल ढप मुरली सारंगी रसाल ।

गावत तहाँ हैं हिंडोल राग गुणमञ्जरी हर्षित मन की लाग ॥

।। 42 ।।

श्रीराधारमण छैल गैल पिचकारी छोरे ॥

केशर की तकि मारे सजनी सबरे अंगन बोरे ।

मूठ गुलाल लाल कर देत हैं लाज सकुच को तोरे, आवत मुख माडन धोरे ॥

अंग अनंग को वरषै भरो जोवन के जोरे ।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

प्राणप्रिया की सैन पाइके लेत जु सबकि अकोरे, करै जो सो कछु थोरे ॥

लेकर ढपहि बजाबै रसिया गावै गीत अप जोरे ।

भागन फागन आय गयौ है बोलत वचन कठोरे,पिये छवि नैन कटोरे ॥

होली को मिस पायके हेली खेल करे सब ठौरे ।

गुणमञ्जरी प्रिया रंग में भरो है होय सबै इक ठोरे,रसिक बर नंदकिशोरे ॥

।। 43 ।।

खेलत बसंत श्री चैतन्य चंद। श्री नित्यानंद आनंदकंद ।।

प्रभु अद्वैत भरि प्रेम रंग। श्री रूप सनातन लिये संग ।।

रघुनाथ भट्ट श्री जीव गोपाल । रघुनाथदास अतिसं कृपाल ।।

चहुँ दिसि गौरा भक्त वृंद । मध्य बिराजत सचीनंद ॥

रच्यौ परस्पर खेल फाग। जहें मनु उमग्यौ अनुराग भाग ॥

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

जहें बाजत ताल मृदंग बीन। डफ अरु आवज सुर नवीन ॥

ढोलक झालरि झाँझ रुज। जहें छाय रह्यौ अनुराग-पुज ॥

महुवरि किन्नर बाजें निसान । अनाधात तहँ तान मान ।।

तत और वितत बजत अनंत । जस विमल-विमल गावें संत ।।

छंदबद्ध गुन गान प्रबंध। जहें नदिया नगर बढ़ौ प्रेमस्पंध ।।

जहें बिबस भये तन नहि सभार। जहं भयौ परस्परसुखद सार ।।

जहें भक्त-जूथ मिल करत गान । जहें नृत्यकरत हैं गुननिधान।।

जहें उड़त अबीर गुलाल रंग। जहें चोबा-मृगमद ज्वाद संग ॥

जहं बरषत है रंग रंग धार। जहें पिचकारिन की होत मार ॥

जहें हो-हो हो-हो मचत खेल। जहें केसरि कुकुम चली है रेल ॥

जहें भाव भरे नाचे सुधीर । जहें अंग पुलकि हग बहै नीर ॥

को कवि बरने तिहीं बार। जहें 'किसोरिदास' सुख भयौ अपार ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 44 ।।

(राग बसंत)

केसर छोंट स्याम तन सोभित, बीच बीच चोबा लपटायो ।

मृगमद और अरगजा लै लै, मोहन अंग छिटकायो।।

राधा मोहन भरि अनुरागनि, मोहन अदभुत खेल मचायो।।

पिचकारी भरि भरि रंगन सों, अबीर गुलाल उड़ायौ।।

खेलत रंग बढ़चौ है परस्पर, निरखि श्रनंग लुभायो।।

'किसोरीदास' ब्रजचंद्र बिहारी, प्यारी छवि निरखत न श्रघायौ।।

।। 45 ।।

(राग धनाश्री । आड़ ताला)

होरी के खिलार किन बदी बरजोरी ।

दूर पाछे ह्व आय अचानक, बरबट बहियाँ मरोरी ।।

डारि गुलाल द्रगन में मेरे,मुख लपटावत रोरी।

भर पिचकारी तकत उरोजन,बोलत हो हो होरी।।

करत न कान नैक काहू की, निधरक ह्वै झकझोरी ।

'किसोरीदास' ब्रजचंद फिरत तू, कुल मरजादा तोरी ॥

।। 46 ।।

होरी खेलत है नव बाल, छैल छबीले सों आजु ।बैस किसोरी गोरी गोरी, चंपे की सी माल ।।

सारी केसरि सों रंगी, घमत लहँगा लाल ।चोबा बेंदी कंत्रकी दिए, चोबा बंदी भाल ।।

ऊँची करि बेती कती, तन उकती भोंह सुभाइ ।मद छाकीं अँखियाँ लसें, बिहुँसे रस के चाइ ॥

लटकत बाजूबंद तर, फोंदा यति अभिराम ।निकसे भुज मूलनि कसे,चोली मुहरा स्याम।

हरी चुरीं तर लटपटी,सोहे मुक्ता दाम।कर लै निकसे गरब से,नरगिस डांडी बाम।।

नथ के मुक्तन हूँ रंगे,देखि लाल सो हाल।नथ के बंधे बसन मनहि,रंगत रंगीलो लाल।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

झीनी आंगी अग्र कुच,झाईं यह मति देत। हिय की अंखिया तीय की पिय की छिप छबि लेत।।

तार बँधे, बेना सँथे, सिर पर राखे बाल। सुक्तन हू के होत है, अंगनि परसत हाल ।।

लसी उरबप्ती तीय उर, घुर कुरसी पर जाय । तऊ घरबसी पीय उर, घसी जीय ललचाय ।।

रुकि-रुकि रही जु नवल तिय, धुकि-धुकि पट के माँह । लुकि-लुकि देखें लाल कों, झुकि-झुकि झटके बाँह ।।

झमके भूमक सारियाँ, दमकें दोपति अंग। खमके खाएनि अंगियाँ, रमके रंगी अनंग।।

मटके मोर मरोर सों, लटके बैनी चारु । पटके अंतर झलमलें, टटके फूलन हारु ॥

बनक कनक सी पाग की, मनक गसी चिकनाइ । तनक पेच के देत में, मन कुपेंच परि जाइ ।।

लटकत तुर्रा पाग पर, मनसिज कुर्रा भाई। मान चोर फुर्राइ के, जुर्रा लों उड़ि जाई।।

निज सूरति की उर बती, पिय सिर चढ़ी दिखाति । त्यों-त्यों तिय इत सिर चढ़ी, सुरति हौस इतराति ।।

सिर किन हूँ तिय के सँची, विरकिन पगिया सेत । छिरकि छबीलौ छकि रह्यौ, थिरकि-थिरकि सुख लेत ।।

कटि मन - भावन पै रही, जटि मन भावन फेर । दाबन लागी ही रहै, घेरी दाबन घेर ॥

।। 47 ।।

श्री नवल बधू रंग भीनी प्रीतम संग खेलै ।

भूमि भूमि रस तानन गावें रोझई छैल नवेले ॥

लाल रंगीलौ पिचकनि रंग भरि-भरि उरजनि ऊपर मेलें ।

मुरि - मुरि बदन दुरावनि में मन-भावन को रस झेलें।।

मटकति धरति चरन धरनी पर,लटकत हार हमेलें।

प्रफुलित नव बेली सी लहलहैं,झेलीं अली अलबेले।।

अंचल मधि चंचल चख अंचल, मैन सैन को पेलें ।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

'बल्लभ रसिक' पिय घुमड़ि गुलाल में, नव घन अंक सकेलै ।।

<u>।। 48 ।।</u>

दोऊ मद-माते लगनि लगे, रंगमगे गात ।

बहसि-बहसि अधरासव प्यावत, बिहॅसि-बिहॅसि अंगनि अरुझावति,

रहसि रहसि लपटति जात ॥

प्रीतम सुकृत बेलि फूली भूली जु तरुनि चढ़ि,सुरति सुरति अरत न अघात ।

यह सुख निरखत हरषत परंखत,'बल्लभ रसिक' सखि नैन सिरात।।

<u>।। 49 ।।</u>

<u>(बसंत राग)</u>

आज महाप्रभु गौरहरि ने खेल बसंत मचायो री।

भक्त मंडली ले संग अपने अतिशय नाच्यो गायो री ।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

हरि हरि बोल कलोलत प्रमुदित तन मन में पुलकायो री।

झन झन झाँझ और खोल बजत हैं मधुर मृदंग सुहायो री।।

संग सोहत अद्वैत गदाधर परमानन्द प्रगटायो री।

अबीर गुलाल उड़न लगे चहुँदिशि मनु रँग बादर छायो री ।।

छिरकत केशर चन्दन अंगन चोवा अतर लगायो री।

भर भर भुज भेंटत भक्तनसों हिलमिल हरष बढ़ायो री ।।

नदिया नगर नारि नर प्रमुदित प्रेम सिंधु उमगायो री।

'सरसमाधुरी' रसिक मगन मन हिय अतिही हुलसायो री ।।

<u>।। 50 ।।</u>

<u>(बसंत राग)</u>

बोल हरि हरि बोल महाप्रभु नाच निमाई गाय रहै।

संग उमंग भरे हरिजन बहु झाँझ और खोल बजाय रहै ।।

कोउ मृदंग कोउ ताल तमूरा बेला संग लगाय रहै।

ऊँचे सुरन अलापत कोऊ ऊँची भुजा उठाय रहे।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

प्रेम छके कोउ सुधि बुधि भूले देह दसा बिसराय रहै।

कोउ आलिंगन करत अंक भर उर आनन्द बढ़ाय रहै।।

उत्सव सरस बसन्त पंचमी प्रेम अंग पुलकाय रहे।

अबीर गुलाल उड़ावत अतिही नभ रंग बादर छाय रहै।।

प्रेमावेश परत धरनी पर नैन नीर बरसाय रहे।

'सरसमाधुरी' सिंधु मीन मन सब हरिभक्त डुबाय रहै

<u>।। 51 ।।</u>

<u>(काफी राग)</u>

ऐसे रंग होरी खेले, गौर किशोर मन मोहे।

लाल गुलाल अनुराग भर्यो है, सनेह सुगन्ध छक्यो है।।

श्वेत अबीर यश फैल रह्यो है, रंग पिचकारी सब कर सोहे।

ब्रज रस गुप्त कुमकुमा केशर, 'वैष्णव' जन विलस्यो है ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 52 ।।

(काफी राग स्वर)

भज मन गौर दोल की लीला।

नवद्वीप गलियन में उड़ रह्यौ-२

अबीर रंग लाल पीला ।। भजन मन गौर.....

सुरधुनि गंगा अविरल धारा-२

ताके तट गुलाल की टीला ।।भजन मन गौर.....

गदाधर पै पिचकारी चलावत-२

बढ़्यौ रस है सरसीला ।। भजन मन गौर.....

'प्रभुदास' की यह अभिलाषा-२

कब होऊँ देख रंगीला ।।भजन मन गौर.....

।। 53 ।।

(बांग्ला राग)

देख देख गौरांगेर लीला।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

ऋतु वसन्ते,सकल प्रियागण मेलि,जलनिधि तीरे चलिला ।।

एकदिके गदाधर,संगे स्वरूप दामोदर, वासुघोष गोविन्दादि मेलि।

गौरीदास आदि करि,चन्दन पिचका भरि,गदाधर अंगे देय टालि।।

स्वरूप निजगण साथे,आविर लइया हाते, सधने फेलाय गोरागाय।

गौरीदास खेलि खेलि,गौरांगजितल वलि,करतालि दिया आगेधाय।।

रूषि स्वरूप कय,हारिला गौरांग राय, जितल आमार गदाधर।

कर तालि देह केहु,नाचे गाय ऊर्ध्वबाहु,ए 'दास मोहन' मनोहर ।।

<u>।। 54 ।।</u>

<u>(बसंत राग)</u>

गौर किशोर नवल विहरत हैं सरस बसंती पाँचेरी।

प्रिया भाव भूषित सहचरि सखि भाव भरे रंग नाचेरी।।

बाजत ताल मृदंग झाँझ मुहचंग सुरन मिल साँचेरी।

गावत राग हिंडोल परज मिल सोरठ देस खमाचेरी ।।

लै गुलाल चुटको रसिकन हिय भाव लेख को साँचेरी।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

तन पुलकित मुसिक्याय चतुर कोउ प्रेम कटाक्षन बाँचेरी ।।

रूप सनातन श्रीगोपाल भट्ट जीव रघु रँग राचेरी।

श्रीवृन्दावन नवद्वीप में निसदिन यह सुख माँचेरी ।।

।। 55 ।।

ऋतुराज बसन्तेर शुभ आगमन ।

फागुनेर मृदु वायु भरेछे भुवन ।।

गाछे गाछ कचि पाता अति सुकोमल ।

दीर्घिकाय शोभे कत पद्म शतदल ।।

माधवी तरूर शाखे पुष्प राशि राशि।

उड़े ऐसे मधुकर पुष्प मध्ये वसि ।।

मधु खाय प्राण भरे हये मातोयारा।

गुन गुन गुंजने पागलेर पारा ।।

कोकिलेर कुहुरवे भरेछे भुवन।

आकुल करिया तोले सवाकार मन ।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

पाखीर कुजन आर मयूरेर शोभा ।

विचरण करे ताहा अति मन लोभा ।।

होलिर समय एलो लये पिचकारी।

सखीगण घेरि राइ श्यामचाँदे हेरि ।।

श्याम अंगे रंग देय विनोदिनी राई।

राई अंगे रंग छोड़े चतुर कानाई ।।

सखीगण रंग देय ए उहार गाय।

सुमधुर गान करे मधुर गलाय ।।

<u>।। 56 ।।</u>

<u>(झझौंटी राग)</u>

हरि हरि बोल नाचें गौरांग, गावें हिलमिलि सब भक्त संग।

रघुनाथ भट्ट रामानन्द राय, कीरतन सुनके रहै सब छकाय।

गोपाल भट्ट दृग प्रेम छाय, गोस्वामी रूप बजवत मृदंग ।।

हरि हरि बोल नाचें गौरांग....

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

गोस्वामी सनातन लिये खोल, गंभीर मधुर धुनि बजत बोल।
हरिदास करत हित से कलोल, जगदानन्द कहें जै जै उमंग ।।
हरि हरि बोल नाचें गौरांग.....

नरहरी हरष उड़वत गुलाल, रामानंद बजवत झाँझ ताल। अद्वैत
अबीर फेंकत उछाल, वासुदेव दत्त बजवत मुचंग ।।

हरि हरि बोल नाचें गौरांग..

नदिया नगरी रह्यो रंग छाय, इक रसना सों बरनों न जाय।
छवि गौरचन्द्र रहि हिये समाय, लख 'सरसमाधुरी' दृगन दंग।।
हरि हरि बोल नाचें गौरांग.....

<u>।। 57 ।।</u>

देख देख गौरचन्द्र बड़ रंगी।

विविध विनोद कलाकत कौतुक कहतहिं प्रेम तरंगी ।।

विपुल पुलकाकुल सब तनु संचरू नयनहिं आनन्द नीर।

भावहिं कहत जितल मझु सखीकुल सुन सुन गोकुल वीर ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

मृदु-मृदु हासि चलत करि भंगिम करे जनु खेलन यंत्र ।
युगलकिशोर बसंतहि जैछन विगलित मन सिज तंत्र ।।

जो इह अपरूप विहारे नवद्वीप जगदानन्द विलासी ।
'राधामोहनदास' मूढ चिते सो निजगुण परकाशि ।।

।। 58 ।।

एहो गौर सुन्दर वर खेलत होरी, नित्यानन्द सहाये सहाये।
अद्वैतादिक संग गदाधर, अबीर गुलाल उड़ाये उड़ाये ।।

श्रीवास संग गेंद कुमकुमा, चित चौपन सु चलाये चलाये।
पिचकारी भर चहुँदिश 'वैष्णव', देत हैं भिजाये भिजाये ।।

।। 59 ।।

(राग ठुमरी)

देखो सुन्दर गौर नागर, नदिया में खेलत है बन होरी।

चन्दन खौरि किये मुख पावन, कहत कहावत होरी ।।

बाजत ताल मृदंग अधौरी, ढोल धमकि धुनि घोरी।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

राग रंग गहगह्यो मच्यो है, कानन सुनियत थोरी ।।

सुनिबे टोल टोल तहँ आए, भक्त वृन्द सब जोरी।

अबीर उड़ावत भरत परस्पर, भये सबन मन भोरी ।।

खेलत खेलत गंग पुलिन में, आय भये इक ठौरी।

करत किलोल लोल सब अंतर, 'मदन' वरत तृन तोरी ।।

<u>।। 60 ।।</u>

<u>(राग सोरठ)</u>

खेलत गौर प्रेम भरे होरी, प्रगट कियो आपन मन चोरी।

ताल मृदंग झाँझ डफ बाजै, हिये भाव सब रंग बिराजे ।।

नैनन असन अनुराग में बोरे, पिचकारी चहुँदिशि तें छोरे।

सोहत चारु चीर अति राते, लग गुलाल रोरी रंग माते ।।

केसर केस हरद रस भरे, छाइ रही तन पीत दुति धरे।

पुलक कदम्ब कुसुम तन सोहै, देखत सुधबुधि 'मदन' कि मोहै।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 61 ।।

रंगे हो हो होरी। खेलत नवल किशोरी ।।

बाजत ताल खार पाखावज, सखिगण घन करतालि।

कुंकुम चन्दन आविर उड़त घन, वरिखन घन पिचकारी ।

दुहुँ दुहुँ खेलन समर प्रबन्धहि, दुहुँ पर दुहुँ पड़ु भोरि।

जितलूँ जितलूँ घन दुहुँ जन गरजन, सखिगण भन वरजोरि ।

खेने खेने थकित वदन दुहुँ निरखन, यैछन चाँद चकोरि ।

तहिं 'शिवराम दास' मन आनन्दे, हेरि हासे थोरि थोरि।

।। 62 ।।

राधामाधव नाचत होरि आनन्दे।

डम्फ अरुण करे, तरल ताल धरे, वाओत कतहिं प्रबन्धे ।।

थो दिमि दिमिध्यो तथै तथै तत्, ता थो थो बोल मृदंग ।

कन कन कन धनि वीष नाद शुनि, स्वर मण्डल स्वरे मुरछे अनंग ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

चंचल चरण खंजनगति भंगिम, झननन मंजीर बोले।

झम झम झुमरि झुमरि झुमरा कोई, वा ओये डम्फ उतरोले ।।

अरुण मेघेर काछे अरुण चन्द्रनाचे, नखतर अरुण आकाशे ।

अरुण कोकिल गाय अरुण मयूर धाय, इह 'शिवराम' रस भाषे ।।

।। 63 ।।

होरि हो रंगे माति।

आविरे अरुण गोरि श्याम काँति ।

निपतति यंत्रे सुरंगिम कुंकुम, चुया चन्दन केशर साथी ।।

चौदिगे आविर उड़ायत ब्रजवधु, अरुण तिमिर किये भेल दिन राति ।

वीण उपांग मुरज सरमण्डल, डम्फ रवार वाओये कत भाति ।।

कोई माउर सुरट् कोई सांरगि, कोई बसन्त गोओये सरजाति ।

नाचत मोर शोर धन कोकिल, रोल बोले मत मधुकर पाँति ।

ऋतुपति परम मनोहर खेलन, हेरि 'शिवराम' हरिखे भरू छाति ।

।। 64 ।।

आजु रंगे होरि, खेलत श्याम गोरी।

सखिगण मिलि गावत बाजत ।

किशोर किशोरि नाचि नाचावत ।।

आनन्दे मन भोरि ।। आजु रंगे...

विविध यंत्र ताल मृदंग। कोई मोचंग बाज्ये उपांग।

तन नन नन तोरि ।। आजु रंगे...

तथ तथ तथ तओ थैया। दृगति दृगति दिमि धैया ।।

चग्रं लग्रं लग् लोरि ।। आजु रंगे...

करु गुडु गुडु दां दिमि दां। किट किट किट थां तृग थां ।।

'शिवराम' गावे होरि ।।

।। 65 ।।

समय जानि तव कानन देवी।

इंगिते वनहुँ बसन्तहिं सेवि ।।

गन्ध चूर्ण बहु आनल ताई।

सब सखिगण देखि लेवल धाई ।।

मणिमय कतशत पिचकारी आनि ।

सहचरी गणे कहे गद्गद् वाणी ।।

एक एक करि सब सहचरी नेल।

शत शत कुसुम गेन्दु पुन देल ।।

कुसमक वारि झारि भरि आनि ।

ताहे मिशावल मृगमद पानि ।।

भरि पिचकारि कानु ताहा नेल।

हेर इते 'माधव' हरषित भेल ।।

।। 66 ।।

सहचरिगण करे धरे पिचकारी।

कानुर अंगेते देइ सुरभित वारि ।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

बहुविध गन्धचूरण करे नेल।

श्यामेर अंगे सब सखिगणे देल ।।

अनंग रंगिम गावत गीत ।

बाजत डम्फ कानु मनोनीत ।।

कत कत राग तव करये आलाप।

गन्धहि दश दिश सकलि वेयाप ।।

सुवल सखा लेइ नागर कान।

घन चूरण देह सबहुँ नयान ।।

सुवदनि हेरइते गोकुल वीर।

मृगमदे सिंचई सकल शरीर ।।

एछेन निति निति करये विलास ।

हेरि 'माधव' सुखसायरे भास ।।

<u>।। 67 ।।</u>

विहरइ निधुवने युगल किशोर।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

फागुरंगे सब हैयाछे विभोर ।।

चुआ चन्दन भरि पिचकारि ।

श्यामनागर अंगे देवत डारि ।।

ललिता विशाखा आदि सखीगण मेलि ।

राइक नियडे कानु लेइ गेलि ।।

नागर खेलइ राइक संगे ।

सब सखि डारत नागर अंगे ।।

वीण रवाव मुरज कपिनास ।

विविध यंत्र लेइ करये विलास ।।

कोइ कोइ गावत नव नव तान।

'ज्ञानदास' हेरि जुड़ाय नयान।।

।। 68 ।।

मधुवने माधव दोलत रंगे।

ब्रजवनिता फागु देइ श्याम अंगे।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

मुख मोडल धनि करि कत भंगे।।

फागुरंगे गोपी सब चौंदिके वेडिया।

श्याम अंगे फागु देइ अंजलि भरिया ।।

फागु खेलाइते फागु उठिल गगने।

वृन्दावन तरलता रातुल वरणे ।।

रांगा मयूर नाचे काछे राँगा कोकिल गाय।

रांगा फूले रांगा भ्रमर रांगा मधु खाय ।।

रांगा पाये रांगा हैल कालिन्दीर पानि ।

गगन भुवन दिग्विदिग ना जानि ।।

रति जय रति जय द्विजकुले गाय।

'ज्ञानदास' चित नयन जुडाय ।

।। 69 ।।

दोलत राधा माधव संगे।

दोलायत सव सखिगण बहु रंगे ।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

डारत फागु मुँहुजन अंगे।

हेरइते मुँहुरूप मुरुछे अनंगे ।।

बाजत कत त यंत्र सुतान।

कत कत रागमाल करू गान ।।

चन्दन कुंकुम भरि पिचकारी।

दुहु अंगे कोई-कोई देवत डारि ।।

विगलित अरुण वसन दुहुँगाय।

श्रमजले बिन्दु-बिन्दु शोभे ताय ।।

हेम मरकते जनु जड़ित पगांर।

ताहे वेडल गज मोतिन हार ।।

दोलापरि दुहुँ निविड विलास।

'ज्ञानदास' हेरि पुरये आश ।।

<u>।। 70 ।।</u>

चपल चपल दिठे सुधामुखी चाय।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

चुया चन्दन गोरी देय श्याम गाय ।।

हेदे हे श्याम नागर हारिले हे।

आहिरी रमणी सने नारिले हे।।

ललिता ललित हासि प्रहेलिका गाय।

आनन्दे विशाखा संगे मृदंग बाजाय ।।

रंग भरे रंगदेवी श्यामेरे शुधाय।

आवार खेलिवा होरि गोपिका सभाय ।।

सुदेवी सरस आँखि नागरे बुझाय।

'ज्ञानदास' गोविन्देर चरणे लुटाय ।।

।। 71 ।।

साजल श्याम,सुरत रण पण्डित, करे करि कुसुम कामान ।

सौरभे श्रमये,कतहुँ कत मधुकर,जीतत मनमथ वाण ।।

धनि धनि अपरुप छान्दे ।।

वेशविलास,सरसमय माधुरी, कामिनी लोचन फान्दे ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

चुया चन्दन,अगोर विलेपन, संयोग विविध विचित्रे ।

समर समित केश,वेश करु बन्धन, वरिहा चारु चरित्रे ।।

वरिहा किंकणी,घन घन रन रनि, रतिरण वाजन वाजे ।

'ज्ञानदास' कह,रसिक शिरोमणि, साजल रमणि समाजे ।।

।। 72 ।।

को कहुँ आजुक आनन्द ओर। फूलवने दोलत गौर किशोर ।।

नित्यानन्द गदाधर संगे। शान्तिपुर नाथ गावइ रंगे ।।

सहचर फागु फेलइ गोरा गाय। थायइ शुनि सब लोक नदीयाय ।।

खोल करताल ध्वनि हरि हरिबोल ।'नयनानन्दे' आनन्दे विभोर।।

।। 73 ।।

वृन्दावन धूम पडल रंग होरि।

नवल किशोर,फागु रंगे रंगिन, रंगिणि नवल किशोरि ।।

राधा संगे,सबहु सखिगण मेलि, करे लेइ भरि पिचकारि ।

समुखहि श्याम,सुन्दर मुख हेरि हेरि,पुनः पुनः देवत डारि ।।

सुवल सखा सने, रोखि श्याम पुन,हेरि सुन्दर मुख गोरि ।

पिचका रंग,अंगे धन वरिखत, मोछत आँखि मुख मोडि ।।

सहचर सहचरि,मटुकि मटुकि भरि, विविध गन्ध रंग घोरि।

देयत योगाई,राई श्याम खेलत,'उद्धवदास' मन भोरि ।।

।। 74 ।।

देख श्याम गोरि सखि मेलि ।

आविरे अरुण,पिचकारि धन,होयल तुमुल खेलि ।।

सखा सुवल करिया संग।

जय जय रूलि,देइ करतालि, हासि हासि रस रंग ।।

सखी ललिता विशाखा साथे ।

हासि खल खल,जितलूँ जितलूँ, बले पिचकारि हाते ।।

रस शेखर रसिका नारि।

श्रमजल दुहुँ,वयन भरल, ए 'उद्धव' बलिहारि ।।

।। 75 ।।

वृषभानु कुमारि नन्दकुमार !

होरिक रंगे, अंगे अरुणाम्बर, मन आनन्द अपार ।।

निरखत वयन, नयन पिचकारित, प्रेम गुलार मनहि मन लाग।

दुहुँ अंग परिमल,चुया चन्दन फागु,रंग तहिं नव अनुराग ।।

खेलत तनु मन, जोरि भोरि दुहुँ, कतये भंगि रस भाति।

तनु तनु सरस,परशे मन मातल,दुहुँ पर दुहुँ पड़ु माति ।।

ब्रज वनिता यत,रीझि रिझायत, रसगारि मृदु भाष।

श्रमजल कलेवर,हेरिया चामर,ढुलायत 'उद्धवदास' ।।

।। 76 ।।

ऋतुराज ब्रज समाज होरि रंगे रंगिया।

नागरि वर होरि रंग,उनमतचित श्याम संग,नाचत कत भंगिया ।।

गावत कत रस प्रसंग,बाजत कत विण मोचंग, थैया थै मूंदगिया।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

चंचल गति अति सुरंग, निरखि भुले कत अनंग, संगति सब सुरंगिया ।।

सर मण्डल स्वर अंभग, विविध यंत्र जल तरंग, मधुर सर उमांगिया।

खेलि गुलाल अंग लाल, रंगिणिगण सुन्दर वर द्युति रसाल, संगिया ।।

ब्रजवधूगण धरत ताल, गावत पद नन्दलाल, राइ अंगे अंगिया ।।

हो हो करि करत भाष, करतालि घन मन उलास, जय जय वर टंगिया ।

गोविन्द गुण करि प्रकाश, रचित गीत 'उद्धवदास', होरि रस तरंगिया ।।

।। 77 ।।

खेलत राधा,श्याम रंग भरि,वृन्दाविपिन समाज ।

चुया चन्दन, वन्दन कुंकुम, रंग मुटकि भारि साज ।।

वैठल श्याम,संगे मधुमंगल, सुबल सखादिक साथे ।

राधा ललिता,विशाखा आदि सहचरि, पिचकारि करि निज हाते ।।

कानुक पिचकारि,यवहि वरिखत, एकहि शत शत धारे।

सहचरि मेलि, राइ यव डारत, कत कत शत एकवारे ।।

बहुविध रंग,अंग सब भीगत, आँचरे मोछत मुख।

जितलूँ जितलूँ भाषि,हासि देइ करतालि, क्षणे क्षणे बाढत सुख ।।

गावत बाजत,आविर उडायत, कोई नाचये मनरंगे।

डम्फ रवाव,सबहुँ मेलि सुस्वर,'उद्धवदास' तछु संगे ।।

।। 78 ।।

नागरि नागर,अरुण वसन धर, श्रमभरे झर झर धाम।

दुहुँ मुख इन्दु,बिन्दु-बिन्दु चुयत,अरुणित मुकुता दाम ।।

दुहुँ मन आनन्द पुंजे।

बहुविध खेलि,हेलि दुहुँ दुहुँ तनु, वैठल निरजन कुंजे ।।

रतन सिंहासन,आसन मणिमय, फुलचय रचित सुठान ।

सकल सखीगण,करतहि सेवन,समयोचित यतन जान ।।

वारि झारि भरि,देइ गुण मंजरि, कोइ सखि चामर टुलाय।

सुरंग अधरे कोई,ताम्बुल योगायाई,'उद्धवदास' बलि याय ।।

।। 79 ।।

राधाप्यारी सह खेलत नन्द दुलाल ।

अरुणित मरकत, अरुण हेम युत, एछेन मुरति रसाल ।।

अरुणाम्बर धर, शोहे कलेवर, अरुण मोति मणिलाल ।

नटपटि पाग, उपरे शिखिचन्द्रक, ओढ़नि रंग गुलाल ।।

दुहुँ करे आविर, दुहुँ अंगे डारत, पिचका रंगे पाखाल ।

अरुणित यमुना, पुलिन कुंजवन, अरुणित युवती जाल ।।

अरुणित तरुकुल, अरुण लता फूल, अरुण भ्रमरगण भाल ।

अरुणित शारी, शुक शिखि कोकिल,'उद्धव' भणित रसाल ।।

।। 80 ।।

ऋतुपति विहरई नागर श्याम। राधा रंगिणि संगिनि वाम ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

चुया चन्दन, परिमल कुंकुम, फागु रंगे सब अंग ।

मदनमोहन हेरि, मातल मनसिज,युवति यूथ शत गायत झूमरि।।

केहु अम्बर धर, केहुँ तनु परशिया रहल केहु हार हर, विभोरि ।

केहु लेइ मुरलि, केहु लेइ मुदरि, दुरहिं दूरे रहि गावत होरि ।।

डम्फ रवार, उपांग पाखोयाज, करतल ताल सुमेलि करि।

'गोविन्द दास' षहु,नटवर शेखर,नाचत गावत ताल धरि ।।

।। 81 ।।

खेलत फागु वृन्दावन चान्द। ऋतुपति मनमथ मनमथ छान्द ।।

सुन्दरिंगण कर मण्डलि माझ। रंगिणि प्रेम तरंगिणि साज ।।

आगु फागु देइ नागरि नयने । अवसरे नागर चुम्बये वयने ।।

चकिते चन्द्रमुखि सहचरि गहने। धाइ धरल गिरिधारिक वसने ।।

तरलन यानि तुरिते एक याइ। कर संचे काढ़ि मुरलि लेइ धाइ ।।

धन करतालि भालि भालि बोल । हो हो होरि तुमुल उतरोल ।।

अरुण अरुण तरु अरुणहि धरणी। स्थल जलचर भेल सभे एक वरणी ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

अरुणहि नीरे अरुण अरविन्द ।अरुण हृदय भेल 'दास गोविन्द' ।।

।। 82 ।।

नटन विभंगे,फागुरंगे मातल,नागर अभिनव नागरि संग।

ऋतुपति रीत,चीत उमतायल,हेरि नवीन वृन्दावन रंग ।।

फागुया खेलत नवल किशोर ।

राधारमण रमणिमनचोर ।।

सुन्दरिवृन्द,करे कर मण्डित,मण्डलि मण्डलि माझहि माझ।

नाचत नारिगण,धनपरि रम्भण, चुम्बन लुवधल नटवर राज ।।

कानुपरश रसे,अवश रमणिगण, अंगे अंगे मिलि झाँपि रहु।

पूरल सबहुँ, मनोरथ मनोभव,मोहन 'गोविन्द दासिया' पहु ।।

।। 83 ।।

आजु कोई कुलवती नाहि वाहिराव ।

यमुना सिनाने कोई नाहि याव ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

विपति पडल आजु युवति समाज ।

सखागण संगे खेलइ युवराज ।।

पंथहि पंथ घेरल चहुँ ओर।

सब ब्रज बालक ताहे आगोर ।।

वटु सुवल दुहुँ भेल एक ठाम।

यूथहि यूथ कयल निरमाण ।।

भरि पिचकारि लेइ सभे हात।

घन वरिखण जनु पडतहिं माथ ।।

आविरे ना हेरिये दीग विदिग।

रंगे वसन वहि यावत भीग ।।

कह 'गोवर्धन' रह गृह माह।

कोई जन मन्दिर छोड़ि वाहिराह ।।

।। 84 ।।

घन मुरली ध्वनि,डम्फ शब्द शुनि, उमडइ हृदय विशाल ।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

हो हो होरि,सघने तर्हि गरजन,उनमत यत ब्रवाल ।।

माझहि मनमथ राज।

नवधन अरुण,वरण तनु हेरइते,तेजई कुलवित लाज ।।

चुया चन्दन,मृगमद कुंकुम, पिचकरि भरि सभे लेइ।

सब जन कोपे,कोपित हइ दुहुँ दुहुँ, नयन वयन पर देइ ।।

इह दिने कैछे,रहिते कह घर माहा,सो सुखे होइ नैराश।

गण संचे आजि,याइ तहिं हेरव,संगे 'गोवर्धनदास' ।।

<u>।। 85 ।।</u>

वाजे दिग दिग थे थैया होरि रंगे।

किशोर किशोरी सखिनि मेलि ।

तपन तनया तीरे केलि ।।

सुखमय अति मधुर ऋतुपति, रतिपति तथि संगे । ।१ ।।

मसृण घुसृण चुवक चन्दन । यंत्र रन्ध्र वरिखे सघन ।।

अरुण वसन ललित रसन, श्रमजल गल अंगे ।। २ ।।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

वीण मुरज सब उपांग। दिमिकि दिमिकि दिमि मृदंग ।।

चंचल गति खंजन जिति, नृत्यति अति भंगे।। ३ ।।

गावे गमके गोपि मेलि।गौरि गुर्जरि रामकेलि ।।

सुभगी सहिनि सुहइ साहनि, संगित रस तरंगे।।४ ।।

यूथे यूथे युवतिवृन्द । माझे सोहत गोकुलचन्द ।।

'गोवर्धन' हृदि वर्धन, कर मर्दन अनंगे।। ५ ।।

<u>।। 86 ।।</u>

प्यारी चरनन में नव बसंत।दश नख शशि किरनन नित लसंत।।

अरुणित अँगुली हैं नव प्रवाल। बिछुआ घुँघुरू मुकलित रसाल ।।

महदी दुति केसू को प्रकाश। जावक नवबेली कर तलास ।।

छिप बोलत श्यामल मणि सरूप।कोकिल चाखत हैं अति अनूप।।

दामन लामन मलया समीर।सुरभित चहुँ दिस मिल हरत धीर ।।

केसर उरकी प्रिय लगी आय।गुण गुण 'गुणमंजरी' मधुप धाय ।।

।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।

।। 87 ।।

(राग झंझोटी खर)

रंगीली कुंज खिरकी पिचकारी।

छोटी-सी अंगुलिन में भरकें छोड़त हैं सुकुमारी ।।

दमक दमक दामिन बरसत है नन्हीं-नन्हीं बूँद हजारी।

'गुणमंजरी' गलियन में खेलत चातक रसिक बिहारी ।।

।। 88 ।।

(दादरा राग)

चित्रा रंग देवी जू विशाखा ललितादि आली, लीनी सब टेर वृषभान की किसोरी जू।

फागुन सुहागन ये भागन ते आयौ सखी, केसर घुरावौ भरियौ गुलाल झोरी जू ।।

'लाल बलवीर' आये नन्द के रंगीले छैल, लीने ग्वाल-बाल ठाड़े सांकरी की खोरी जू।

<u>।।श्रीश्रीमहाप्रभूगौरांगदेवो जयति।।</u>

एती सुनि गोरी सबै धाई चहुँ ओरी कहैं, होरी लाल होरी! आज होरी लाल होरी जू।।